e-ISSN:2582-7219

# INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 7, Issue 12, December 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.521

© 2024 IJMRSET | Volume 7, Issue 12, December 2024| DOI: 10.15680/IJMRSET.2024.0712041

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

# गिलिगडु की पहचान : वृद्ध जीवन संघर्षों की दास्तान

**डॉ.गीता संतोष यादव**

सहयोगी प्राध्यापिका, एस.एम्.आर.के.महिला महाविद्यालय, नाशिक

**शोध-सारांश** : गिलिगडु उपन्यास हिंदी साहित्य के वृद्ध जीवन की समस्यओं का चित्रण करता हुआ बेजोड़ उपन्यास है| यहाँ गिलिगडु शब्द से तात्पर्य है चिडयाँ |यहाँ पर लेखिका ने गिलिगडु को कर्नल स्वामी की पोतियों के माध्यम से रेखांकित किया है|उनकी यह गिलीगडु ही उनके जीवन का आधार है| जसवंत सिंह की मुलाकात कर्नल स्वामी से सुबह के सैर के दौरान होती है| जब टॉमी के घसीटने के कारण वे गिर जाते हैं|जसवंत सिंह भी पत्नी की मौत के बाद कानपुर छोड़ अपने बेटे के पास रहने चले आते हैं|किन्तु कुछ ही दिनों में उन्हें ऐसा लगता है कि,इस घर में एक नहीं दो कुत्ते हैं|एक टॉमी और दूसरा स्वयं वे | अक्सर उनमें एक संकोच विद्यमान रहता है|इस घर को वे अपना घर नहीं समझ पाते हैं| यहाँ तक कि उनका एकलौता बेटा नरेन्द्र भी बालकनी में उनके रहने की व्यवस्था करता है|बहू सुनैना भी जसवंत सिंह के प्रति आत्मीय व्यवहार नहीं दिखाती है|उपन्यास की सम्पूर्ण कथावस्तु जसवंत सिंह और कर्नल स्वामी की भेटों –मुलाकातों और वार्तालाप से आगे बढ़ती है|कर्नल स्वामी अक्सर अपने संयुक्त परिवार, बेटे-बहुओं और गिलिगडु का इतना गुणगान करते थे कि,वे अपने परिवार के सबके चहेते अप्पू हैं|किन्तु कई दिनों तक कर्नल स्वामी के सुबह की सैर पर पुलिया पर मुलाकात न होने पर जब जसवंत सिंह अचानक उनके पते पर उनके घर पहुंचाते हैं तो उन्हें पता चलता है कि,आकस्मिक हृदयघात होने के कारण बारह दिन पहले ही कर्नल स्वामी का निधन हो चुका है|यहाँ बाबू जसवंत सिंह की हालत भी ठीक नहीं रहती|बेटी-बेटे बहू सभी उनसे मात्र पैसे और जमीन–जायदाद और सोना-चांदी के लिए ही सम्बन्ध रखना चाहते हैं|अतः वे सबकुछ छोड़ अपने घर कानपुर लौटने का निर्णय लेते हैं|

**सामग्री:** चित्रा मुद्गल कृत गिलिगडु उपन्यास |

**शोध-पद्धति:** प्रस्तुत शोध लेख के लिए समीक्षात्मक,विवरणात्मक,विवेचनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया जायेगा |

**कुंजी शब्द (Key Words):** गिलिगडु,जसवंत सिंह,कर्नल स्वामी,सुनगुनिया,मिसेज श्रीवास्तव, कानपुर आदि|

**प्रस्तावना:** स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा जगत में अपनी धारदार कहानियों के जरिये विशिष्ट पहचान बनाने वाली मूर्धन्य कथाकार चित्रा मुद्गल ने **'एक जमीन अपनी'** सरीखे उपन्यास से जो जमीन बनाई, उसे **'आवां'** जैसे वृहद उपन्यास से और पुख्ता ही किया। चित्रा मुद्गल जी आलोच्य उपन्यास गिलिगडु की लेखिका हैं|हिंदी जगत में चित्रा मुद्गल जी किसी पहचान की मोहताज नहीं हैं| अब तक उनके कई उपन्यास प्रस्तुत हो चुके हैं जिसमें उन्होंने समाज की विभिन्न समस्याओं को वाणी देने का कार्य किया है| वर्ष १९९० में उनके पहले उपन्यास **'एक जमीन अपनी'** को विज्ञापन जगत पर लिखा प्रथम उपन्यास मानकर सराहा है|२००३ में दूसरा मील का पत्थर उपन्यास आँवा प्रतिष्ठित बिरला फाउंडेशन व्यास सम्मान से सम्मानित किया गया है, जिसमें युवाओं की समस्या पर प्रकाश डाला गया है| पोस्ट बॉक्स नंबर २०३ नालासोपारा में लेखिका ने किन्नर जीवन को उपन्यास के कथ्य की आधारभूमि बनाई है|गिलीगडु वृद्ध जीवन पर आधारित उपन्यास है| सच कहें तो चित्रा जी ने समाज की ज्वलंत और मौन दोनों ही समस्याओं को वाणी देने का काम किया है| चित्रा मुद्गल की कथाओं में समाज की गतिविधियों का चित्रण किया है |

सामाजिक चेतना से लैस उनके पात्र समकालीन जटिल यथार्थ में अपनी खास जगह खुद बनाते हैं।**'गिलिगडु'** चित्रा मुद्गल का आकार में छोटा, किन्तु संवेदनशीलता में बहुत गहरा उपन्यास है। इस उपन्यास में सेवानिवृत्त बुजुर्ग की एकरेखीय कहानी नहीं, जीवन के रंग बहुआयामी प्रयोगों में उभरकर आए हैं। यह उपन्यास तेरह दिन की कहानी के चलते दो बुजुर्गों के जीवन का पूरा खाका प्रस्तुत करता है|आज के बदलते जीवन मूल्यों को भी परिभाषित करता है कि कैसे नौजवान पीढ़ी अपने बुजुर्गों को घर में सम्मान न देते हुए अकेला छोड़ देती है।यह कृति इस विश्वास को और भी गहरा करती है कि साहित्यिक मूल्यों में सामाजिक सार्थकता का महत्त्व हमेशा बना रहेगा। जीवन में छोटे-छोटे महायुद्धों में सहज विजय पाने के लिए रचनात्मक रास्ते की अनूठी तलाश है चित्रा मुद्गल का यह उपन्यास 'गिलिगडु'| इस उपन्यास की पठनीयता ऐसी है कि शुरू करते ही बंधे चले जाएं। जीवन ऐसा कि पूरी धड़कन के साथ

© 2024 IJMRSET | Volume 7, Issue 12, December 2024| DOI: 10.15680/IJMRSET.2024.0712041

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

सामने आए और कला ऐसी कि अनायास खिल-खिल जाए। उपन्यास में रचनात्मक विश्वास ऐसा कि रचनाकार के अन्य उपन्यास भी पाठक पढ़ने को प्रेरित हो जाएं।

सामायिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित गिलीगडु उपन्यास का प्रारंभ जसवंत सिंह द्वारा टॉमी को फारिग कराने से होता है|जसवंत सिंह स्वयं बावासीर के मरीज हैं| किन्तु यहाँ बिना डॉक्टर को दिखाए 'हिमअप' की गोलियाँ बढ़ा देते हैं क्यूंकि रोज कमोड भर खून जा रहा है|तकलीफ ठीक नहीं हो रही और उनके डॉक्टर सक्सेना कानपुर में बैठे हुए हैं|यहाँ बेटे को समय नहीं कि वह उन्हें किसी डॉक्टर के पास ले जाये|कानपुर से आते वक्त उन्हें इस बात की प्रसन्नता हुई थी कि "चलो बेटे बहू ने टॉमी की जिम्मेदारी सौंपकर उन्हें अपनी गृहस्थी की किसी जिम्मेदारी के काबिल तो समझा|अब तो उन्हें यह भी लगने लगा था कि इस घर में वे सही अर्थों में किसी के लिए बुजुर्ग हैं तो वह केवल टॉमी है|पोते मलय-निलय के नाज-नखरे उठाने का सुख उनकी थाली का कौर न था|"[१] बाबू जसवंत सिंह एक दिन टॉमी को लेकर जब घुमा रहे थे तब टॉमी की बदमाशी के चलते वे घसिटकर गिर गए| इसी जगह पर कर्नल स्वामी और जसवंत सिंह की पहली मुलाक़ात होती है| उन्होंने ही जसवंत सिंह को सैर के दरम्यान जूते पहनने की सलाह दी|किन्तु,जसवंत जी को बेटे से जूते लाने के लिए कहने में बड़ा संकोच हो रहा था| एक दिन जसवंत सिंह के संकोची स्वाभाव को लक्ष्य कर कर्नल स्वामी ने ही उन्हें जूते लाकर दे दिया| कर्नल स्वामी अक्सर जसवंत सिंह को खुद के हिसाब से जीने के लिए सलाह देते हैं| अपनी तरह जिंदादिल बनाना चाह रहे थे|जसवंत सिंह की जिन्दगी में कर्नल स्वामी के आ जाने के कारण उनका समय कुछ खुशनुमा हो गया था| उनकी राय पर ही अब वे टॉमी को फारिग कराकर घर छोड़ आते थे और कर्नल स्वामी के साथ सैर करते थे|वे उनके साथ दिल्ली के कुछ पर्यटन स्थलों पर भी सैर कर आये थे|जो उनके बेटे नरेन्द्र से उन्हें कभी नसीब नहीं हुआ था| बेटे नरेंद्र की जेन कार और ड्राईवर बहू सुनैना के परिवार वालों के लिए ही खाली रहती थी|जसवंत सिंह का उसपर कोई अधिकार नहीं था|कर्नल स्वामी अक्सर अपने परिवार की चर्चा जसवंत सिंह से करते| अपने बहू-बेटों,पोते-पोतियों के बारे में बताते|उनकी पोतियों को ही वे प्यार से गिलिगडु कहते थे|कर्नल स्वामी जसवंत सिंह से कहते हैं "गिली माने चिड़िया |गिलिगडु माने चिड़ियाँ |दरअसल हमारी मलयालम में कहते हैं किली कलु|हमने उसका हिन्दीकरण कर लिया है!"[२] लेकिन कर्नल स्वामी बताते हैं कि उनकी गिलिगडु हैं उनकी जुड़वाँ पोतियाँ!चहकती-फुदकती,मस्ती करती,हुडदंगे मचाती कुमुदनी और कात्यायनी ...उफ्हो धमाल हैं दोनों पूछिए मत|" यहाँ दोस्ताना बढ़ने पर जसवंत सिंह भी अपनी परिवारिक बातें कर्नल स्वामी से साझा करते हैं| कर्नल स्वामी के प्रगल्भित विचारों से वे अपने आप को कभी –कभी हीन भावना से ग्रसित पाते हैं|फिर भी वे अपनी पत्नी की कंजूसी वृत्ति,बच्चों के पढाई-लिखाई आदि को करने के लिए किये गए समझौतों की बातें बताते |किस प्रकार पाई-पाई जोडकर वे कानपुर में खुद का अपना मकान बनाते हैं|नरेन्द्र की अम्मा की उम्र होने पर अपने गराज की जगह पर रामआसरे पासी और उसकी पत्नी सुनगुनियां को रखते हैं| इसकी एवज में सुनगुनियां बंगले के अहाते में साफ-सफाई और मालकिन का छोटे-बड़े कामों में हाथ बंटा देती थी | किन्तु,अचानक एक दिन रामआसरे अपने गाँव किसी काम से जाता है और देशी शराब पीने से उसकी मौत हो जाती है|सुनगुनियां का जेठ सुनगुनिया से उसके मरद के मरने के पाँच दिन बाद ही जबजस्ती करता है और उसे धमकी देता है कि यदि उसने यह बात किसी से कही तो उसके इकलौते बेटे को खेत के अंधे कुंए में डाल देगा|सुनगुनियां की जायदाद हड़पने के चक्कर में वह उसकी शादी एक पचपन साल के बुड्ढ़े से करवाना चाहता है|किन्तु कहीं न कहीं सुनगुनियां को इस बात पर विश्वास है की,उसके मालिक और मालकिन के यहाँ उसका गुजारा मान- मर्यादा से निबह सकता है|सुनगुनियां अपने गाँव से भागकर कानपुर जसवंत सिंह के यहाँ चली आती है|नीची जाती की होने के कारण जसवंत सिंह की पत्नी उससे खाना बनवाने का काम नहीं करवाती किन्तु,सुनगुनियां उनकी गराज में रहकर उनके बंगले के आहाते का झाड़-पोंछा कर समय बचने पर गाँव के नेताजी रामखेलावन यादव के घर काम-काज कर अपना समय निकाल रही थी कि,अचानक ही एक दिन जसवंत सिंह की पत्नी की हृदयघात से मृत्यु हो जाती|सुनगुनियां के पाँव-जमने से पहले ही उखड जाते हैं| जसवंत सिंह की पत्नी की मृत्यु होती है उसी समय ही उनके एक घनिष्ठ मित्र हरिहर की मृत्यु भी हो जाती है| इससे जसवंत सिंह अवसन्न हो जाते हैं|डॉ.की सलाह पर कि अब उन्हें अकेला नहीं रहना चाहिए वे बेटे नरेन्द्र के यहाँ दिल्ली रहने चले आते हैं|किन्तु यहाँ उन्हें उनकी उपस्थिति घर के कुत्ते टॉमी से भी गयी गुज़री लगने लगती है| वो तो भला हो कर्नल स्वामी का जो उनकी भेंट जसवंत सिंह से हो गयी और उनके साथ कुछ दिन तो अच्छे बीत गए |

जसवंत सिंह ने दिल्ली आते सामय कानपुर के घर के अहाते की देख-रेख का काम सुनगुनियां को सौंपा था| किन्तु परिवार का कोई व्यक्ति यह नहीं चाहता था| "नरेन्द्र ने भी सुनगुनियां की उपस्थिति पर प्रश्नचिन्ह लगाया था|यानी नाक घुमाकर कटघरे में लेने की कोशिश उसने भी की,कि सुनगुनियां से गैराज खाली करा लेना निहायत जरूरी है|आगे चलकर कोई तमाशा न खड़ा हो जाए|सुना है पिछली गली के ब.स.पा.नेता राम खिलावन यादव के घर सुनगुनियां ने पूरे समय की टहल पकड़ ली है| राम खिलावन की कोठी छोटी नहीं कि सुनगुनियां को वहां ठौर ठिकाने की कामी हो |"[२]

© 2024 IJMRSET | Volume 7, Issue 12, December 2024| DOI: 10.15680/IJMRSET.2024.0712041

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

जसवंत सिंह की भलमनसी के कारण सुनगुनियां को उनकी गराज में रहने के लिए मिल जाता है| वह भी उनके घर की अच्छे से देखभाल करती है|समय-समय पर वह उन्हें गाँव-घर की खबर भी फोन पर देती रहती है| "घर दुवार कुशल मंगल है|भीतर का हाल तो वह नहीं बता पायेगी|चाभी सौंपकर गये होते तो बात जुदा थी|उनकी तबियत पानी कैसी चल रही है?रामवाती-सोमवती को नेताजी की मदद से सरकारी स्कूल में भर्ती कराने की सोच रही|मालिक की क्या राय... इस प्रकार वह अपने दुःख –सुख की सभी बातें आपने मालिक जसवंत सिंह से साझा करती रहती है| जसवंत सिंह का भी उसपर पूरा विश्वास है| जसवंत सिंह की चलती तो वे अपना पूरा घर संभालने की जिम्मेदारी सुनगुनियां को देकर आते|

जसवंत सिंह के दिल्ली आने पर कर्नल स्वामी से उनकी मुलाकात मानो जीवन में एक नया रंग भर देती है |वे उनसे काफी प्रभावित होते है|कर्नल स्वामी जिंदादिल इंसान हैं| भरा-पूरा उनका परिवार है|तीन-तीन बहू बेटे,पोते-पोतियाँ हैं|हर समय उनकी अर्थात अप्पू की पूछ होती है|सारा परिवार उनके कहे में चलता है,उनको इज्जत देता है|उनकी पोतियाँ गिलिगडु तो स्कूल से आते ही उनसे चिपक जाती हैं|अक्सर जसवंत सिंह कर्नल स्वामी की बात सुनकर ऐसे ही भरे-पूरे परिवार की कल्पना करते हैं और खुद को यह सुख नसीब नहीं यह सोचकर खुद को अपनी किस्मत को कोसते हैं अपने मन में हीन भावना का अनुभव करते हैं|वे सोचते हैं उनके बच्चे ऐसे क्यों नहीं हैं|बेटे नरेंद्र के बचपन में उन्होंने उसे बहुत शौकों से वंचित रखा था| इसलिए उन्हें अब उससे अपनी जरूरत की चीजें कहने में संकोच होता है|आई.आए.टी.कानपुर में होते हुए भी बाबू जसवंत सिंह का कठोर आदेश था कि नरेन्द्र को घर पर रहने की कोई जरूरत नहीं है|हॉस्टल में रहे पढाई में एकाग्रता रहेगी|हॉस्टल के घटिया खाने की घर पर चर्चा वर्जित थी|अकेले वह ही नहीं खाता सब खाते हैं |जिन्दगी में कुछ बनने के लिए त्याग पहली शर्त है|एक बार नरेन्द्र की अम्मा उनसे छिपाकर हॉस्टल शक्करपारे और कटहल के अचार भिजवा रही थीं|देख लेने पर उन्होंने कक्का की सायकिल के केरियर में बंधी अचार की मटकी और शक्करपारे उठाकर गेट के बाहर फ़ेंक दिए| अम्मा घर से कुछ बनाकर भेजना चाहतीं तो दुर्व्यवहार पर उतर आते|अब बाबू जसवंत सिंह को लग रहा था कि,उन्होंने उसके साथ ज्यादती की है|इसलिए नरेन्द्र के घर में वे उससे उनके लिए कुछ लाने का आग्रह नहीं करते हैं| उनके पास जॉगिंग के लिए जूते नहीं हैं नरेन्द्र को पता है कि टॉमी को रोज सैर कराने के लिए बाबूजी ही जाते हैं किन्तु वह उन्हें जूते ला देने की बात भी नहीं सोचता है|जसवंत सिंह के मित्र कर्नल स्वामी ही उन्हें जॉगिंग के नए जूते लाकर देते हैं| उन्हें गरम कपडे भी लाकर देने के लिए कहते हैं लेकिन जसवंतसिंह संकोचवश उन्हें मना कर देते हैं|

यहाँ तक की बात तो चलो जाया थी कि,वे नरेन्द्र से किसी बात की शिकायत नहीं करते थे|एक बार तो बहू सुनयना से सामने के बिल्डिंग की एक पड़ोसन शिकायत कर गयी कि,जसवंत सिंह उसकी किशोरवयीन लडकी को देखकर पायजामा ढीला करते हैं|किन्तु हुआ यूँ था कि जसवंत सिंह बावासीर से परेशान थे|दवा लगाते समय उनकी खिड़की गलती से खुली रह गयी रही होगी|किन्तु वे किसे अपनी सफाई दें और कौन उनकी सुनेगा| नरेन्द्र जसवंत सिंह को गाँव से लाने से पहले नरेन्द्र ने कहा था कि-"फ्लैट में दो कमरे हैं बाबूजी|एक वे दोनों इस्तेमाल करते हैं|दूसरे में बच्चे रहते हैं|बालकनी दो हैं उनमें से एक खासी बड़ी है-याद होगा उन्हें|उसे वह शीघ्र ही ब्लैक स्लाडिंग ग्लास से बंद करवाने जा रहे हैं|उनके दिल्ली आने से पहले वही बच्चों का कमरा होगा|"[३] किन्तु जसवंत सिंह तब भौंचक रह गए जब नरेन्द्र का ड्राइवर जसवंत सिंह का सामान बालकनी में रखने लगा|कर्नल स्वामी ने जब इस गलतफहमी को दूर करने के लिए बहू-बेटे से बात करने की राय दी तो जसवंत सिंह नहीं माने| वे किसी को सफाई नहीं देना चाहते थे| मात्र कर्नल स्वामी से वे अपने दिल की सारी बातें बताते हैं|

बाबू जसवंत सिंह बार-बार इस घर को अपना घर समझने की भूल कर बैठते हैं, "जबकि दसियों बार,दसियों तरह से उन्हें समझाया जा चुका है कि वे अपने काम से काम तक सीमित रहें|"[४] बेटा नरेन्द्र और बेटी शालिनी दोनों चाहते हैं कि,बाबू जसवंत सिंह कानपुर वाला अपना लॉकर सरेंडर कर दें लॉकर का ब्याज भरना फिजूलखर्ची है |शालिनी बाबू जी से कहती है-साढ़े छह सौ रूपये किराया मामूली रकम नहीं है मंहगाई के दिनों में|फिजूलखर्ची से बचना चाहिए बाबूजी को|' बाबू जसवंत सिंह बेटी की इस प्रकार की चिकनी चुपड़ी बातों से उद्विग्न हो जाते है और कहते हैं-"लॉकर का किराया नरेन्द्र को फिजूल खर्च लग रहा,टेलीफोन कस्टडी में रखा हुआ है,बंगले का हाउस टैक्स भरना पड रहा है,मुहल्ले के चौकीदार को तनख्वाह का हिस्सा देना पड रहा है|यह सब फिजूल खर्च नहीं?बाबू जसवंत सिंह को लगा कि अब वे अपने को बांधे नहीं बाँध पाएंगे|उन्हें उम्मीद नहीं थी कि,उनकी बेटी शालिनी उनका पाला छोडकर अचानक भाई-भौजाई की तरफदारी में जा खडी होगी|उनके लिए उसके मन में भी कोई संवेदना शेष नहीं बची|थोड़े ऊँचे स्वर में बाबू जसवंत सिंह ने कहा-उन्हें सिखाने की कोशिश कर रही लडकी,अपने भाई-भौजाई को भी कर्तव्यों की याद दिलाये| ऐसी कोरी सलेट हैं दोनों कि मिसाल मिलनी कठिन है|उनका मानना है कि इस घर में एक नहीं दो कुत्ते हैं-एक टॉमी,दूसरा अवकाश –प्राप्त सिविल इंजीनियर जसवंत सिंह!टॉमी की स्थिति निस्संदेह उनकी बनिसबत मजबूत है| उसकी इच्छा –अनिच्छा में बिछा रहता है पूरा घर|उनके लिए किसी को बिछे रहना जरूरी नहीं लगता|टॉमी अच्छी नस्ल का कुत्ता है|सोसायटी में उनके घर का रूतबा बढ़ाता है|उनके चलते उनका रूतबा कलंकित हुआ है|कलंकित होकर अक्षत-चंदन क्यों चढ़ाएं?[५] शालिनी उनकी बातों से चिंतित हुई! उसे

© 2024 IJMRSET | Volume 7, Issue 12, December 2024| DOI: 10.15680/IJMRSET.2024.0712041

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

लगा बाबू जसवंत सिंह का दिमाग असंतुलित हो रहा|वे कुछ बहकी-बहकी बातें कर रहे हैं|ऐसी बातें अपनी बेटी से उन्होंने पहले कभी नहीं की|

उसने अपने बाबूजी को पुचकारने की चेष्टा की|धैर्य से समझाने और वस्तुस्थिति का खुलासा करने की|बाबूजी न सहज होकर जी रहे थे न भैया-भाभी को ही जीने दे रहे|पति-पत्नी के बीच परस्पर समझ की जमीन तड़क रही|भैया के लिए उसे भर पाना कठिन हो रहा| न वह बाबूजी से खुलकर कुछ कह पाते हैं, न भाभी सुनयना से। अशांत मनःस्थिति के चलते कार्यालय में मन लगाकर काम कर पा रहे। ऐसा नहीं कि भैया सोचते नहीं कि बाबूजी को कैसे खुश रखा जाए। साथ रहते हुए उन्हें किसी प्रकार का मानसिक कष्ट न हो। वह यह भी मानते हैं कि उनके स्वभाव में आए परिवर्तन का कारण है अम्मा का अचानक चले जाना। अकेलापन उन्हें खाए जा रहा। मगर भैया के अकेले प्रयत्नों से तो आशान्ति कम नहीं हो सकती। बाबूजी को भी अपनी खोह से बाहर निकलने की जरूरत है। बाहर तभी निकल सकते हैं जब वे स्वयं को निकालने का तय कर लेंगे। परिवार में केवल अपने मान-अपमान के विषय में नहीं सोचेंगे। वह उनके समक्ष है क्या जो उन्हें परिवार के मायने समझाए? भैया तो यहां तक सोच रहे हैं कि जहां बाबूजी का मन लगे, वे प्रसन्नचित्त रहें, वहीं उन्हें रखा जाए। उन्होंने पता लगाया है कि नोएडा के सेक्टर पचपन में कोई निकेतन वृद्धाश्रम है, क्यों न उनके रहने की व्यवस्था वहीं कर दी जाए। हमउम्रों की जमात में बाबूजी का मन लगा रहेगा। भैया जगह देख आए हैं। वे कह रहे हैं कि बहुत सुंदर है। भोजनादि की व्यवस्था उत्तम कोटि की है। उन्हें वहां रखने के निर्णय से भैया पर खर्च का अतिरिक्त बोझ पड़ेगा| भैया उसे सहर्ष उठाने के लिए तैयार हैं।हरिद्वार के किसी आश्रम के विषय में भी भैया के मित्र राजीव रायजादा ने चर्चा की है। आश्रम ठीक गंगातट पर है। आश्रम से बाहर न भी निकला पाए तो भी आराम से कमरे की खिड़की से संझा की मनोरम आरती देखी जा सकती है। भैया को आगे की भी चिंता हो रही। एकाध महीने के भीतर अमेरिका कंपनी का नियुक्ति-पत्र भी मिल सकता है उन्हें। अम्मा जिंदा थीं तो बात और थी। अब उन्हें अकेला कानपुर छोड़ना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं|६

इन सब बातों में बाबू जसवंत सिंह को बहुत याद आते हैं तो वे हैं कर्नल-स्वामी|वे अपनी सारी बातें उनसे साझा करना चाहते हैं|किन्तु कई दिनों से उनका कुछ पता नहीं हैं|कहाँ चले गए|बाबू जसवंत सिंह पुलिया पर रोज उनका इन्तजार कर वापस चले आते हैं|उनके द्वारा दिए गए टेलीफोन नम्बर पर कई बार संपर्क करने की कोशिश की|किन्त,किसी ने उत्तर नहीं दिया|बाबू जसवंत सिंह ने सोचा कि इतने भरे-पूरे परिवार में कोई फोन नहीं उठा रहा कहीं सपरिवार वे दिल्ली के बाहर तो नहीं चले गए|इन सब बातों को सोच-सोचकर और परिवार के वृधाश्रम की बात सोच-सोच कर वे परेशान हो गए|उन्हें बुखार आने लगा डॉक्टर ने फ्लू बतया और हॉस्पिटल तक एडमिट होने की नौबत आई|उन्हें कर्नल स्वामी की बहुत याद आती है|दस से बारह दिन ऐसे ही निकल गए|एक दिन वे खुद जब कर्नल स्वामी के घर उनका पता पूछते –पूछते जाते हैं तो वहाँ उन्हें जो असलियत पता चलती है|उससे उनके होश उड़ जाते हैं |मिसेज श्रीवास्तव जो कि उनकी पड़ोसी हैं बताती हैं कि, 'पिछले आठ वर्षों से हमने भाईसाहब को अकेले ही रहते देखा है|बाबू जसवंत सिंह जब मिसेज श्रीवास्तव से माधवी,अनुश्री,गिलिगडु...बेटा श्रीनारायण के बारे में पूछते हैं तो वह बतात्ती है कि "चौरानबे की बात होगी|पत्नी की मौत के बाद कर्नल स्वामी निपट अकेले हो गए थे|तीनों बेटों तब तक नई नौकरियाँ पकड़ नए भविष्य की तलाश में नए शहरों में अपना डेरा बना लिया था|छूँछे वादों के अंबार पर उन्हें बैठाए हुए कि बहुत जल्द उन लोगों के लिए संभव हो पाएगा कि उनके अप्पू उनके साथ ही रह सकें|बंगलोर,हैदराबाद में कुछ ही समय में उनके अपने छोटे-मोटे फ्लैट भी हो गए|पिछली गरमियों में मंझला श्रीनारायण आया था|हैदराबाद से| आया वह विशेष प्रयोजन से ही था कि उनके अप्पू नोएडा वाला चार कमरों का फ्लैट बेवजह अगुवाए हुए हैं। फ्ल ॅट बेचकर क्यों नहीं तीनों भाइयों को बांट दें? उनके तंग फ्लैट अब उन्हें तंग कर रहे हैं। तीनों के अपने-अपने शहर में प्लाट खरीद लिए है ं और अब उन्हें इस बात की जरूरत महसूस हो रही है कि अपने प्लाट पर वे अपने मनपसंद बंगले का निर्माण कर जितनी जल्दी हो सके खुले घरों में पहुंच खुलकर रह सके। खुलकर रहने के लिए उन्हें तगड़ी रकम की जरूरत है। लोन के चक्कर में बैठे-बिठाये फँसना उन्हें मंजुर नहीं। मंजूर भी क्यों हो जब साधन घर में मौजूद हो।

कर्नल स्वामी पहले ही राजनगर स्थित गाजियाबाद वाले कीमती प्लाट को बेचकर उन्हें फ्लैट खरीदने में मदद कर चुके थे। श्रीनारायण का प्रस्ताव उन्होंने ठुकरा दिया। कुद्ध श्रीनारायण ने पिता पर हाथ उठा दिया। कर्नल स्वामी के रोने-चीखने का स्वर सुनकर मिस्टर एंड मिसेज श्रीवास्तव का दिल दहल उठा। दरवाजा भडभड़ाया। श्रीनारायण से उन्होंने दरवाजा खोल देने की चिरौरी की। श्रीनारायण ने भीतर से ही उनको आपसी मामले में दखल न देने की धमकी दी। घबड़ाए श्रीवास्तवजी ने सौ डायल कर पुलिस सहायता बुला ली । पुलिस ने दरवाजा खुलवाया। लहूलुहान कर्नल स्वामी को '**कैलाश अस्पताल**' ले जाया गया। बोलने के काबिल होते ही उन्होंने बेटे के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कराने से मना कर दिया। श्रीनारायण ने माफी मांगते हुए अपने अप्पू के पांव जो पकड़ लिए थे...

© 2024 IJMRSET | Volume 7, Issue 12, December 2024| DOI: 10.15680/IJMRSET.2024.0712041

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

जसवंत सिंह ने अनुश्री का जिक्र किया था। उसका किस्सा भी कम दुखद नहीं। डेढ़ साल की मासूम जुड़यां बेटियों को छोड़ उसने अपने नृत्य गुरु के साथ डंके की चोट पर रहना शुरू कर दिया था। बच्चियों को जतन से उनकी दादी ने पाला-पोसा। ए.पी.जे. स्कूल में नर्सरी में उन्हें दाखिल कराया। उनकी दादी के न रहने पर श्रीनारायण बच्चियों को आकर ले गया। उसी बीच कर्नल स्वामी की अनिच्छा के बावजूद श्रीनारायण ने दूसरा ब्याह कर लिया और बच्चियों को हैदराबाद में ही हॉस्टल में डाल दिया। बच्चियों की तसवीरें कर्नल स्वामी ने पूरे घर में लगा रखी हैं। बच्चियां उन्हें पिता से छिपकर जब-तब फोन किया करती थीं। श्रीनारायण से छिपाकर वे हैदराबाद बच्चियों से मिलने अक्सर जाया करते थे। होटल में रहते थे। किसी रिश्तेदार को भनक नहीं लगने देते|इन सब चीजों को देखकर वर्तमान समय में मिसेज शर्मा का यह कथन इस प्रकार की युवा पीढी के लिए सबसे बड़ा अभिशाप है-"ऐसी कसाई औलादों से तो आदमी निपूता भला|हमें इस बात का कोई गम नहीं कि हमारी कोई औलाद नहीं|"[७]

ये सब बातें सुन बाबू जसवंत सिंह के आगे मानो धरती घूमने लगी|उन्होंने सोचा भी नहीं था कि कर्नल स्वामी सरहद की जंगे ही नहीं अपने घर के भीतर भी कई जंगों को लड़ते आ रहे हैं|सदैव खुशमिजाज दिखने वाला व्यक्ति अपनी पीड़ा का एक अंश भी कभी बाबू जसवंत सिंह के सामने नहीं व्यक्त होने देता है|इसी बीच जसवंत सिंह को अणिमा दास की कविता हाथ लग गयी जो उनके की कोट में कई दिनों से खो गयी थी|उसको पढ़ने के बाद जसवंत सिंह ने एक अनोखा फैसला किया वह यह कि-बाबू जसवंत सिंह वल्द ठाकुर समरेंद्र बहादुर सिंह-गांव सगवर, पोस्ट सगवर, जिला उन्नाव (उ.प्र.)। अपने जीवन की वसीयत बदल रहे हैं। वे सदियों से चली आ रही खानदानी परंपरा को बदलना चाहते हैं। उसे नए सिरे से नए हरफों में लिखना चाहते हैं। उन्हें समझ में नहीं आता कि लोग अपनी वसीयत बदलने का जोखिम क्यों नहीं उठाना चाहते। उन्हें क्यों नहीं समझ में आता कि वसीयत बदले बिना उनके जीवन में गति संभव नहीं।बहरहाल बाबू जसवंत सिंह अपने जीवन की गति को जड़ नहीं होने देना चाहते। उन्होंने अभी-अभी निश्चय किया है कि ग्लैक्सो अपार्टमेंट्स पहुंचने से पूर्व वे थ्री वीलर वाले को निर्माण विहार से सटे बाजार के सामने रुकवाएंगे। **'गोयल ट्रेवल एजेंट'** से परसों सुबह की शताब्दी का कानपुर का टिकट कटवाएंगे। फिर एस.टी.डी. बूथ से नेताजी राम खिलावन यादव के घर फोन कर सुनगुनियां से बात करवाने के लिए कहेंगे। इस समय एक बजने को है और अभी सुनगुनियां उनके घर दोपहर की टहल निपटा रही होगी।बाबू जसवंत सिंह सुनगुनियां से कहना चाहते हैं- अपने और उसके रिश्ते को वह जो भी नाम देना चाहे, उन्हें स्वीकार होगा। चुनना उसे ही है, उन्हें नहीं। उन्हें यह भी मालूम है कि नाम वही चुन सकती है और दे भी सकती है। वे अब तक, सच कहें तो, उसे अनाम रूप से ही अपने भीतर जीते रहे हैं। आगे भी उसे शायद इसी रूप में जीते रहते अगर उनकी मुलाकात अकस्मात् अणिमा दास की लंबी कविता से न हो जाती।बाबू जसवंत सिंह सुनगुनियां से कहेंगे-आज वह केवल उनकी सुने । केवल उनकी! आज जो वह बोलना चाह रहे है आगे शायद उसे सुनने की ललक में न बोल पाएं। वे जीवन का यह नितांत नया पड़ाव अपनी गिलिगडु-कात्यायिनी-कुमुदनी के साथ बिताना चाहते हैं। वे कानपुर वाले घर के सामने वाले बरगद को अपने घर में रोपना चाहते हैं। नहीं भूल पाते कि मुंहअंधेरे उनके उठने से पहले एक चिड़िया चहकती है फिर खो-खो खेलती हुई-सी वह दूसरी को जगाती है- दूसरी तीसरी को, तीसरी चौथी को, चौथी पांचवी को, सैकड़ों चिड़ियां जो अद्भुत लय-ताल में घमासान कोरस शुरू करती हैं, चहचहाट का कोरस उनके रोम-रोम को आंदोलित करता है...

बाबू जसवंत सिंह सुनगुनियां से यह भी कहना चाहते हैं कि कानपुर पहुंचते ही वे अपने परिचित एडवोकेट मुन्ना सिंह कुशवाहा से अविलंब मुलाकात करेंगे। उनसे अपनी नई वसीयत बनवाएंगे और उसे रजिस्टर्ड करवाएंगे कि कानपुर वाला घर उनकी पैतृक संपत्ति नहीं है। उनकी अर्जित संपति है। उनके न रहने पर उस घर की एकमात्र अधिकारिणी सुनगुनियां होगी। वे उसके नाम बैंक में नया लॉकर भी लेना चाहते हैं। ताकि आगे चलकर किसी बात को लेकर उसे किसी विवाद का सामना न करना पड़े। किसी चुनौती का सामना करना भी पड़ेगा तो उन्हें पूरा विश्वास है कि चुनौतियों का सामना करने में सुनगुनियां समर्थ है।नरेंद्र के व्यवहार का उन्हें अंदाजा है। उनके इस अप्रत्याशित व्यवहार से उसे निश्चय ही धक्का लगेगा। उनके लिए घृणा उपजेगी। संभव है कि वह यह निश्चय कर ले कि उनके मरणोपरांत बाल उतरवाने तो दूर क्रियाकर्म में भी नहीं शामिल होगा। वे उसे व्यर्थ के लोकापवाद में नहीं घसीटना चाहते। जो कुछ हो रहा है और जो कुछ होगा, उसके लिए स्वयं ही जिम्मेदार होना चाहते हैं। सुनगुनियां से वे कहकर जाएंगे और उसे अपनी वसीयत में स्पष्ट लिखवा भी देंगे कि सुनगुनियां का पुत्र रामरतन अर्थात अभिषेक आसरे ही उनकी कपालक्रिया करे। उसे ही वह अपने दाह-संस्कार का अधिकार दे रहे हैं।'हां, दोपहर का खाना सुनगुनियां उनके लिए बनाकर रखे। शताब्दी में वे केवल नाश्ता-भर करेंगे। उनहें क्या पसंद है-उसे पता है|'[७]

निष्कर्ष : अस्तु,हम देखते हैं कि गिलिगडु उपन्यास में बाबू जसवंत सिंह,कर्नल स्वामी और श्रीवास्तव दंपति के माध्यम से जीवन के अंतिम पड़ाव में जी रहे बुजुर्गों की व्यथा-कथा का चित्रण हुआ है| तीनों बुजुर्ग दंपतियों की व्यथाएं अलग-अलग हैं|कर्नल स्वामी जिस प्रकार का जीवन जीना चाहते थे उस प्रकार की फैंटसी में जीते हैं| अपने दुःख को अंत तक बाबू जसवंत सिंह तक नहीं जानने देते|आज की युवा पीढी भी बुजुर्गों को बस अपना ए.टी.एम.कार्ड ही मानते हैं|उन्हें अपने अधिकारों की जानकारी है किन्तु,अपने

ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.521| ESTD Year: 2018|

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

(A Monthly, Peer Reviewed, Refereed, Scholarly Indexed, Open Access Journal)

कर्तव्यों का बिलकुल भी अहसास नहीं है|कर्नल स्वामी के परिवार की स्थिति देखकर मिसेज श्रीवास्तव का कथन उचित ही है कि ऐसी औलाद होने से तो निपूती ही रहना ठीक है|इस प्रकार चित्रा मुद्गल जी ने आज की वृद्ध पीढी की मौन समस्याओं को गिलिगडु उपन्यास के माध्यम से आवाज दी है|इन कठिन परिस्थितियों के समाधान की ओर भी इशारा किया है|

## सन्दर्भ

१) गिलिगडु चित्रा मुद्गल , सामयिक प्रकाशन -२०१० पृष्ठ संख्या -१०
**२)** गिलिगडु चित्रा मुद्गल , सामयिक प्रकाशन -२०१० पृष्ठ संख्या -३०
३)गिलिगडु चित्रा मुद्गल , सामयिक प्रकाशन -२०१० पृष्ठ संख्या -५६
४) गिलिगडु चित्रा मुद्गल , सामयिक प्रकाशन -२०१० पृष्ठ संख्या -९२
५)गिलिगडु चित्रा मुद्गल , सामयिक प्रकाशन -२०१० पृष्ठ संख्या -९६
६) गिलिगडु चित्रा मुद्गल , सामयिक प्रकाशन -२०१० पृष्ठ संख्या -९७
७) गिलिगडु चित्रा मुद्गल , सामयिक प्रकाशन -२०१० पृष्ठ संख्या -१४३-१४४

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

# INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

## IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com